Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

किरातार्जुनीयम् एवं शिशुपालवधम् महाकाव्य में धर्म और राजनीति

मुकेश कुमार
शोधच्छात्र, शासकीय एम.एल.बी. उत्कृष्ट, महाविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
सम्बद्ध जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर मध्य प्रदेश।

Article Info

Publication Issue :
January-February-2024
Volume 7, Issue 1
Page Number : 140-144
Article History
Received : 01 Feb 2024
Published : 15 Feb 2024

शोधसारांश– दोनों महाकाव्यों में कवियों ने अपनी भावना का प्रतिपादन किया है। जिसमें धर्म और राजनीति की अवधारणा पर अत्यधिक बल दिया जिसमें धर्म मनुष्य की अवधारणा का भी प्रतिरूप माना जाता है। महाकवि भरवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित माने जाते हैं। धर्म की अवधारणा पर भी अत्यधिक बल दिया है। वही महाकवि माघ भी धर्म और राजनीति के मापदण्डों को पूर्ण रूप से प्रतिपादित किया है। जिससे यह दोनों महाकाव्य राजनीति और धर्म का प्रतिरूप माना जाता है। दोनों महाकवियों ने अपने–अपने महाकाव्यों में धर्म और राजनीति पर विशेष बल दिया है। जिससे यह प्रतिपादित होता है। कि यह दोनों ग्रन्थ महाभारत जैसे महाकाव्य की अवधारणा पर ही निहित है। जिसका अभिप्राय समाज में मानवता के आस्था का प्रतिपादन करना है। जो धर्म और राजनीति की अवधारणा को पहचानता वही सामाजिक आर्थिक मनोभूति को भी जानता है। जिससे यह प्रतीत होता है कि दोनों महाकवि धर्म और राजनीति में अपनी भावना को प्रतिपादित करते हैं।

मुख्य शब्द– किरातार्जुनीयम शिशुपालवधम्, महाकाव्य, धर्म, राजनीति, सामाजिक, आर्थिक।

भूमिका :– यह सम्पूर्ण विश्व प्रकृति का विस्तार है। जहां भी देखा जाय वहां इसी प्रभा का विस्तार पाते हैं। प्रकृति ही विश्वोत्पत्ति की सामग्री है। प्रकृति गुणमयी है। प्रकृति में ही मनुष्य का वास है जिसमें मनुष्य अपनी प्रतिक्रिया को व्यक्त करता है। जिसमें मनुष्य अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिये धर्म और राजनीति जैसे भावात्मक तथ्यों का सहारा लेता है। वर्तमान समय में धर्म और राजनीति के स्वरूप का सम्य दर्शन सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र की जरूरत है। इसके मेल जोल पर सम्यक निश्चय नहीं कर सकते इसके लिए धर्म और राजनीति के परस्पर सम्बंधों का ऐतिहासिक सन्दर्भ में सही विवेचना करना अति आवश्यक है।[1] मनुष्य धर्म और राजनीति के अवधारणा का प्रतिपादक है। अगर धर्म की बात करते हैं तो धर्म एक ऐसा दिव्य अस्त है जो सम्पूर्ण सृष्टि के धारण से निमित्त मानवता के मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति प्राप्त करता है। अगर राजनीति की बात करते है तो हम कह सकते हैं कि राजनीति सामाजिक व्यवस्था का प्रतिरूप है। जिससे मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति प्राप्त करता है। अगर राजनीति की बात करते हैं तो हम कह सकते हैं कि राजनीति सामाजिक व्यवस्था का प्रतिरूप है। जिससे मानवीय सम्वेदना का पूर्ण रूप से

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रतिपादन होता है। धर्म का आस्था का प्रतिरूप एवं प्रतिफल मान लिया जाता है। जिससे मानवीय सम्वेदना का निदर्शन होता है।[2] जिसके विषय में धर्म सिन्धु नायक में ग्रन्थ में यह उल्लेख है।

धर्मे मतिर्भवतु वः सतंतोत्थितानां
सहोयक एव परलोकगतस्य वन्धुः।
अर्थाः स्त्रियश्च निपुणैरपि सेव्यमाना
नैवाप्तभावमुपयान्ति कुलो वशित्वम्।।

जिससे यह प्रतीत होता है कि अभ्युदय के लिए सतत् प्रयत्नशील लोगों की बुद्धि धर्म में स्थित हो परलोक में मात्र वही हितकारी हो जिससे समाज धार्मिक प्रतिष्ठा का प्रतिपादन हो सके।[3]

धर्मयो वाधते धर्मो न स धर्मः कुधर्म तत्।
अविरोधी तु यो धर्मः स धर्मः सत्यविक्रमा।।

जो धर्म दूसरे धर्म को बाधा पहुंचावे वह धर्म ही नहीं बल्कि कुधर्म है। वह धर्म समस्त धर्मों का अवरोधी है जिससे मनुष्य की प्रतिक्रिया व्यक्त होती है।

राजनीति एक प्रचलित अवधाराणा का प्रतिरूप है। राजनीतिशास्त्र का एक प्रचलित नाम नीतिशास्त्र है जिसका अभिप्राय है मार्गदर्शक या पथ प्रदर्शक जिससे नीति की परिभाषा को निम्न शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है।

'नीयते व्यस्थाप्यते स्वेषु स्वेषु सदाचारेषु लोकाः यथा सः नीति[4]: मनुस्मृति – 4.5

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जिसके लिए धार्मिक और राजनीतिक दोनों पहलुओं का महत्व पूर्ण योगदान है। जिससे सामाजिक भावनाओं का प्रतिपादन होता है। वस्तुतः नीतिशास्त्र एक विचारशीलता है। पारस्परिक व्यवहारों का आधार है। [5] राजनीति से सम्बद्ध प्राचीन ग्रन्थों में राजधर्म राजशास्त्र दण्डनीति आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

राजधर्मन प्रवक्ष्यामि यथावृत्तो भवेन्नृपः।
सम्भवश्च यथा तस्य, सिद्धिश्च परमायथा ।। मनुस्मृति 7/1

अर्थात् राजा को इस प्रकार से आचरण करना चाहिए कि वह उसे प्रजापालक विषयों सिद्धि को प्राप्त करे उन सब राजधर्मों का परिचायक मानवता की आस्था का प्रतिरूप है।

मनुष्य एक धार्मिक प्राणी इसलिए मनुष्य के लिए धर्म का महत्व अधिक है। मानव जीवन के प्रारम्भिक काल के इतिहास से ही धर्म का इतिहास जुड़ा हुआ है।[6] संस्कृतसाहित्य जगत में महाकवियों ने धर्म और राजनीति धर्मनीति का प्रतिपादन किया है। जिससे महाकवि प्रतिक्रिया को व्यक्त किया जा सकता है। भारवि जी राजनीति काव्य के सबसे बड़े प्रतिपादक माने जाते हैं जिन्होंने अपनी प्रक्रिया को पूर्ण रूप से व्यक्त किया है।[7]

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में राजनीति – महाकवि भारवि जी ने किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में राजनीतिक को मूल रूप से निर्देशित किया है। राजनीति के महामनीषी युधिष्ठिर की संड्गति के प्रभाव के कारण एक मूढमति वनचेर भी दुर्योधन की राजनीति, कूटनीति और उसकी प्रजापालक पद्धति को समझ सका।[7]

निसर्गदुर्बोमबोधविक्लबाः क्वभूपतीनां चरितं क्व जन्तवः ।[8]
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया निगूढतत्वं नयवर्त्य विद्विषाम्।। कि.1/6

जिसका भावार्थ शत्रु दुर्योधन की दुरूप नीतियों का समझना कोई सामान्य वात नहीं है। फिर भी इस दुष्कर कार्य को पूरा करने वाला अहंकारहीन वह वनेचर विनम्रता पूर्वक इस शत्रु की राजनीति को जानने का श्रेय युधिष्ठिर प्रदान करता है।[9] वनेचर युधिष्ठिर को अवगत करा रहा है कि प्रजानन को अपने अनुकूल बनाने के लिए महर्षि मनु द्वारा उपदिष्ट प्रजापालक विषयक मार्ग पर चलने की प्रबल इच्छा रखता है। और नीति के द्वारा अपने पुरूषार्थ को बढ़ा रहा है।[10]

कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीयमगम्यरूपां पदवीं प्रतिप्सुना।
विभज्य नक्तन्दिवमस्ततन्द्रिणा वितन्यते तेन नयेन पौरूषम् ।। कि. 1/9

शिशुपालवधम् महाकाव्य में राजनीति :– शिशुपालवाम् महाकाव्य में महाकवि माध ने राजनीतिक पहलुओं का चित्रण बड़े मार्मिक ढंग से किया है। श्रीकृष्ण द्वारा बलराम से शिशुपाल के अत्याचार के बारे मे गुप्त मन्त्रणा करना और नीतिज्ञ उद्धव द्वारा शिशुपाल की राजनीति का विश्लेषण करना यह नीतिशास्त्र और उसकी प्रतिक्रिया का सबसे बड़ा उपकारक है।[11] युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में शिशुपाल को निमंत्रण देना और राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल को उत्तेजित करना यह राजनीति का सबसे बड़ा अंग है।[12]

यस्तवेह सवने न भूपतिः कर्म कर्मकरवत् करिष्यति।
तस्य नेष्यति वपुः कबन्धतां बन्धुरेष जगतां सुदर्शनः ।। शिशु 14/16 श्लोक

राजनीतिक चिन्तन : भारत में दार्शनिक चिन्तन के अतिरिक्त राजनीतिक चिन्तन का भी यथेष्ट मंथन हुआ है। भारत का महान राजनीतिक चाणक्य था। वैसे महाभावत का शान्ति पर्व राजनीति के विषय में भी प्रसिद्ध है।[14] किन्तु चाणक्य का राजनीतिक चिन्तन ही आगे चलकर शुक्रनीति, कामन्दकीय नीतिसार, पन्चतंत्र आदि ग्रन्थों का आदर्श रहा है और यही चिन्तन भारतीय साम्राज्यवाद की आधारशिला भी बना। पन्च महाकाव्यों पर इस तत्वाज्ञान और राजनीतिक चिन्तन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में धर्म – किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में धार्मिक अवधारणा का प्रतिपादन हुआ है धर्म की रक्षा के दुर्योधन का नाश होना अतिआवश्यक था जिसके लिए इन्द्र द्वारा बताए हुए मार्ग पर चलकर अर्जुन पाशुपत अस्त्र प्राप्त करता है। [16] भगवान श्री कृष्ण की नीतियाँ के द्वारा धर्म की रक्षा के भीष्म पितामह और कौरवों का नाश होना अति आवश्यक है।

अर्जुन की तपस्या से प्रसन्न होकर धर्म की रक्षा हेतु भगवान शंकर अर्जुन को पाशुपत प्रदान करते हैं। तत्पश्चात् सफल मनोरथ अर्जुन भगवान शिव के कमलवत् चरण में शीश झुकाकर प्रणाम करके धर्म की रक्षा हेतु उद्यत हो उठता है। तत्पश्चात् युधिष्ठिर भी भगवान शिव को प्रणाम करके आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।[17]

वज्र जय रिपुलोकं पादपद्मानतः सनः गदित इति शिवेन श्लोधितों देवसंघै।।
निजगृमथ गत्वा सादरं पाण्डुपुत्रों धृतगुरूजयलक्ष्मीधर्मसूनुं नमाम्।। किराता 18/48

शिशुपालवधम् महाकाव्य में धर्म – शिशुपालवध महाकाव्य महाकवि माघ का सबसे प्रिय धार्मिक ग्रन्थ है। जिसमें धर्मराज युधिष्ठिर धर्म की अवधारणा को प्रतिस्थापित करने के राजसूय यज्ञ करना चाहते हैं।[18]

धर्मराज युधिष्ठिर ने इस विषय पर भगवान श्री कृष्ण नम्र पूर्वक निवेदन किया है भगवान धर्म की रक्षा के लिये चेदि नरेश शिशुपाल की मृत्यु निश्चित है क्योंकि मूल आधार और धर्मपालक आप ही है। आपके कारण धर्ममय पद को प्राप्त किया जा सकता है। और आप ही कारण हम धर्मराज कहलाए।[19]

तत्र मन्त्रपवितं हविः क्रतावश्नतो व वपुरेव केवलम्।
वर्णसम्पदमतिस्फुटां दधत्राम चोज्ज्वलमभूद्धविर्भुजः ।।शिशु.14/26 श्लोक

जिसका अभिप्राय यह है कि, महाकवि माघ अपनी कृति में राजनीति एवं धर्मनीति का पूर्ण निदर्शन किया है। जब श्री कृष्ण की पूजा के अनंतर शिशुपाल अत्यधिक कुपित हो उठा तो वह श्री कृष्ण और युधिष्ठिर को कटु वचन कहने लगा[20] शिशुपाल ने युधिष्ठिर से पूछा कि तुम अग्रपूजा के लिये कृष्ण को क्यों बुला रहे हो वह इस योग्य नहीं है।[21]
युधिष्ठिर को कोषते हुए कहता है। धर्म की रक्षा करना धर्मराज कहलाना यह दोनों तुम्हारा नाटक है। तुम धर्म के रक्षक नहीं हो बल्कि धर्म की अवहेलना करने वाले हो।[22]

अथ तत्र पाण्डुतनयेन सदसि विहितं मुरद्विषः ।
मानमसहत् च चेदिपतिः परवृद्धिमत्सरि मनोहि मानिनाम्।। शि. 15/1

जिससे यह प्रतीत होता है कि धर्म की स्थापना के लिये शिशुपाल का वध करना न्याय संगत है इसलिए श्री कृष्ण धर्म की स्थापना के लिए शिशुपाल के वध हेतु उद्यत हो उठे हैं।[24] और धर्म की स्थापना हेतु कृष्ण के द्वारा शिशुपाल का वध किया जाता है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत महाकाव्यों में दोनों कवियों ने अपनी भावना का प्रतिपादन किया है। जिसमें धर्म और राजनीति की अवधारणा पर अत्यधिक बल दिया जिसमें धर्म मनुष्य की अवधारणा का भी प्रतिरूप माना जाता है। महाकवि भरवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित माने जाते हैं। धर्म की अवधारणा पर भी अत्यधिक बल दिया है। वही महाकवि माघ भी धर्म और राजनीति के मापदण्डों को पूर्ण रूप से प्रतिपादित किया है। जिससे यह दोनों महाकाव्य राजनीति और धर्म का प्रतिरूप माना जाता है। दोनों महाकवियों ने अपने–अपने महाकाव्यों में धर्म और राजनीति पर विशेष बल दिया है। जिससे यह प्रतिपादित होता है। कि यह दोनों ग्रन्थ महाभारत जैसे महाकाव्य की अवधारणा पर ही निहित है। जिसका अभिप्राय समाज में मानवता के आस्था का प्रतिपादन करना है। जो धर्म और राजनीति की अवधारणा को पहचानता वही सामाजिक आर्थिक मनोभूति को भी जानता है। जिससे यह प्रतीत होता है कि दोनों महाकवि धर्म और राजनीति में अपनी भावना को प्रतिपादित करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. धर्मसिन्धु श्री सुदामा मिश्र शास्त्री
2. धर्मसिन्धु श्री सुदामा मिश्र शास्त्री पृष्ठ 15

3. वेदों में राजनीतिशास्त्र डॉ कपिल देव द्विवेदी पृष्ठ 6
4. नीतिशास्त्र– आचार्य देवेन्द्र मुनि पृष्ठ 42
5. मनुस्मृति 7/1
6. धर्म–दर्शन डॉ. लक्ष्मी सिन्हा पृष्ठ 11
7. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य भूमिका टीकाकार रामसेवक दुवे पृष्ठ 48
8. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य 1/6 श्लोक
9. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य भूमिका सम्पादक रामसेवक दुबे पृष्ठ 18
10. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य 1/9 श्लोक
11. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास डॉ. कपिल देव द्विवेदी पृष्ठ 201
12. शिशुपालवधम् महाकाव्य भूमिका डॉ. केशवराव
13. शिशुपालवधम् महाकाव्य 14/16 श्लोक
14. महाभावत उद्योगपर्व – 36/7
15. पंचतंत्र – विष्णुशर्मा भूमिका पृष्ठ 12
16. मल्लिनाथकृत सर्वाङ्कषा टीका पृष्ठ 42
17. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य– सम्पादक डॉ. रामसेवक दुबे भूमिका पृष्ठ 34
18. शिशुपालवधम् महाकाव्य – सम्पादक डॉ. केशवराय (भूमिका) पृष्ठ 54–55
19. शिशुपालवधम् महाकाव्य भूमिका पृष्ठ 40
20. शिशुपालवधम् महाकाव्य– भूमिका पृष्ठ 48
21. मल्लिनाथकृत सर्वङ्गषा टीका पृष्ठ 20
22. शिशुपालवधम् महाकाव्य 15/1 श्लोक
23. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास डॉ. कपिल देव द्विवेदी
24. शिशुपालवधम् महाकाव्य भूमिका – पृष्ठ 12